ओम शान्ति 24-6-11 मधुबन

मम्मा के स्मृति दिवस पर बापदादा को भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश - (गुल्जार दादी)

आज जब मैं वतन में पहुंची तो जैसे सदा के मुआफिक बाबा पहले दूर से मिलते फिर दूर से दृष्टि लेते-लेते हम बाबा के सामने आ जाते हैं और बाबा की बाहों के झूले में समा जाते हैं। ऐसे ही आज भी बाबा की बाहों के झूले में झूल रही थी तो इतने में क्या देखा, जैसे ही मैं बाबा की बाहों में झूल रही थी तो बाबा गायब हो गया और मम्मा उस जगह आ गई और मैंने अपने को मम्मा की बाहों में झूलते हुए देखा। मैं मम्मा को देख बड़ी खुश हो गई। मम्मा के नयनों में भी प्रेम के मोती झलक रहे थे। मैं भी उसमें ही समा गई। मम्मा ने कहा कि तुम किसकी याद ले आई हो? मैंने कहा मम्मा, आज तो दिल्ली से आई हूँ तो दिल्ली वालों की और सभी विश्व के ब्राह्मणों की याद ले आई हूँ। मम्मा ने कहा मैंने भी साकार में इतने बच्चे नहीं देखे जितने अभी दिखाई दे रहे हैं। मम्मा के सामने सारे देश-विदेश, गाँव के, काले गोरे सब जो अभी बाबा-मम्मा के बच्चे बने हैं, सब प्रकट हो गये। सब आगे पीछे अर्ध चन्द्रमा के रूप में खड़े हो कोशिश कर रहे थे कि हम भी मम्मा को दिखाई दें। फिर मम्मा ने कहा देखो बच्चे, बाबा ने आपको इतना भाग्यशाली बनाया है जो रोज़ 4 बजे सवेरे-सवेरे जब बाबा मुझे वतन में इमर्ज करता है, उस समय बाबा के साथ मैं भी आपका भाग्य देख वाह बच्चे वाह! कहती हूँ।

फिर मम्मा के साथ बाबा इमर्ज हो गये और बच्चे मर्ज हो गये। बाबा और मम्मा दृष्टि से मिल रहे थे। वो सीन बड़ी अद्भुत थी, जो मैं साक्षी होकर देख रही थी। मम्मा के नयनों में स्नेह के आंसू छलक रहे थे। ऐसे मम्मा बाबा का मिलन देखा। फिर बाबा ने कहा मम्मा अभी आपके साथियों को बुलाता हूँ, तो बाबा ने हाथ हिलाया और सभी जो एडवान्स पार्टी में गये हैं, वो सब अर्ध चन्द्रमा के रूप में इमर्ज हो गये। भाई कम थे बहनें और दादियाँ ज्यादा थी। तो भाई आगे खड़े हुए और दादियाँ-बहनें पीछे थी। बाबा ने कहा देखो, यह हैं एडवान्स में आपके लिए राजधानी बनाने वाले। आप राज्य करेंगे ना तो कोई बनाने वाला भी चाहिए। यह आपके लिए राजधनी बनायेंगे। तो सभी बाबा मम्मा दोनों को देखकर खुश हो रहे थे।

फिर बाबा ने कहा मम्मा, आपको कभी मधुबन के बच्चे याद आते हैं? मम्मा ने कहा मेरे तो दिल में सभी बच्चे समाये हुए हैं, जब भी याद करती हूँ तो प्रकट हो जाते हैं, नहीं तो दिल में समाये रहते हैं। फिर बाबा सभी को एक हॉल में ले चले। उस हॉल में एक सीन बनी हुई थी। उसमें बाबा और मम्मा दोनों का पहले साकार रूप था, फिर फरिश्ता रूप फिर लक्ष्मी-नारायण का रूप था। फिर सभी एडवान्स पार्टी वाले इन तीन रूपों के पीछे लाइन में खड़े थे। हमारी दीदी-दादी सबसे आगे, लक्ष्मी-नारायण के बीच में खड़ी थी। बाबा ने यह रूप दिखलाके कहा अच्छा अभी चलो, बाबा आपको अपने वतन की सैर कराता है। फिर हम दूसरे हॉल में गये वहाँ चबूतरे बहुत अच्छे चमकीले लाइन में बने हुए थे, वो भी अर्ध चन्द्रमा के रूप में थे। बाबा ने कहा सभी बैठ जाओ। तो हम सभी चबूतरों पर बैठ गये। मम्मा-बाबा सामने के दो चबूतरों पर बैठ गये। बाबा ने कहा देखो बच्ची, यह एडवान्स पार्टी है और मेरे साकारी बच्चे, जो साकार में हैं वो एडवान्स में जाने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं, बाबा अभी दोनों को इमर्ज करता है। ऐसे कहते बाबा के जो निमित्त विशेष सेवाधारी, सर्विसएबुल मुख्य बच्चे हैं पूरे विश्व के, उन्हों को बाबा ने इमर्ज किया। वो भी चबूतरों पर बैठ गये। बाबा ने कहा देखो यह एडवान्स पार्टी वाले हैं और आप एडवान्स स्थिति में जाने वाले हो। फिर बाबा ने मम्मा को कहा मम्मा आज तो सब आपका स्मृति दिवस मना रहे हैं तो आज आप इन बच्चों को बोलो।

फिर मम्मा ने सारी सभा को पहले नज़र से निहाल किया। मम्मा की दृष्टि से लग रहा था जैसे एक एक को विशेष कोई वरदान दे रही है। फिर मम्मा ने कहा कि सभी के प्रति मेरी एक आश है कि जो एडवान्स में बनने वाले हैं उनमें पुरुषार्थी सभी हैं लेकिन अब आप अभी सारा दिन अपने अन्दर वैराग्यवृत्ति की उत्पत्ति करो, कमजोरियों से बेहद का वैराग्य करो। वैराग्य के बाद ही सतयुग में जायेंगे। अभी हम यहाँ हैं और कल वहाँ जाना है, यह स्मृति अभी बढ़ाओ। सभी ने कहा मम्मा आपका संकल्प हम सभी पूरा कर रहे हैं, अभी और तेज करेंगे। बीच-बीच में वैराग्य थोड़ा ढीला हो जाता है। अभी आपने कहा है तो हम सब बेहद के वैरागी, और भविष्य के राज्य अधिकारी इस स्टेज में ज्यादा टाइम गुजारेंगे। सभी दादियाँ, सभी निमित्त भाई-बहनों ने मम्मा के आगे कहा मम्मा हम करके ही दिखायेंगे और जो

हमारी बड़ी दादी, दीदी, चन्द्रमणी दादी, शान्तामणी दादी, मनोहर दादी आदि गई हैं उन्होंने भी कहा मम्मा हम आपके साथ हैं। हमारी भी यही आशा है, कब तक हम एडवान्स पार्टी में रहेंगे। वैराग्य के बाद ही राज्य मिलेगा इसलिए मम्मा अभी इनको जल्दी से जल्दी यह पुरुषार्थ करना है। मम्मा ने इशारे से पूछा ठीक है? सभी ने हाथ हिला के कहा मम्मा सब ठीक है।

फिर उसके बाद बाबा ने कहा कि देखो बच्चे अभी संसार की हालत तो देख रहे हो। संसार की हालत तो बिगड़ती ही जा रही है, बिगड़ी हालत को सुधारने वाले तो आप बच्चे ही हो। तो एडवान्स पार्टी वालों ने बाबा-मम्मा को कहा कि हम भी बहुत इन्तजार कर रहे हैं। हमारा पार्ट भी अब चेन्ज होना चाहिए। ऐसे तो माँ-बाप हमें रिगार्ड देते हैं, पालना हो रही है। हमारे माँ-बाप ऐसे समझते हैं कि ये साधारण बच्चे नहीं हैं, अलौकिक बच्चे हैं। हमको इसी नज़र से देखते हैं। मैंने कहा मम्मा आप कहाँ हो? आपका तो कभी सुना ही नहीं। मम्मा ने कहा मेरे को सभी मोहल्ले वाले या सम्बन्धी जो भी आते हैं वो सभी शुरु से लेकर ऐसे समझते हैं कि यह कोई फरिश्ता है, देवी-देवता रूप में नहीं देखते लेकिन उन्हों को मेरी शक्ल में बहुत तेज लगता है। मोहल्ले वाले भी दु:ख के समय मेरे पास आते हैं और मेरे को देवी समझ के पूछते हैं हम क्या करें! आप हमको कोई दो शब्द बताओ। अभी भी मैं जहाँ हूँ, माँ-बाप भी मुझे साधारण रूप में नहीं देखते हैं, अवतार के रूप में देखते हैं। बाकी जो भी माँ-बाप के कनेक्शन, रिश्ते वाले आते हैं तो कोई बड़ा दिन होता है तो समझते हैं कि हम इनके घर में जायें। तो आस-पास वाले सब इकट्ठे हो जाते हैं, उन्हें मैं ज्ञान तो नहीं सुना सकती लेकिन मैं सुनाती हूँ कि अपने को दु:खी नहीं करो, सुख में रहो। अच्छा, किसी ने दो मिनट दु:ख की कोई बात की लेकिन आप दु:खी कितना दिन तक रहते हो, तो आप उनको हाथ जोड़कर ओम् शान्ति कह उनसे छुट्टी ले लो। मम्मा उनसे ओम् शान्ति कहलाती है। जो भी सामने आता है वह महसूस करता है कि इनकी दृष्टि से शान्ति मिलती है। कभी भी अशान्त होते हैं तो दो मिनट के लिए भी दृष्टि से साइलेन्स की शक्ति लेकर जाते हैं। इसका कोई प्रोपोगण्डा नहीं है लेकिन आसपास वाले और कनेक्शन वाले आते हैं। मम्मा ने यह अपना सुनाया।

बाबा ने कहा आज मम्मा के दिन पर सभी बच्चे प्रकट हुए हैं। एडवान्स पार्टी और साकार दुनिया के भी बच्चे प्रकट हुए हैं। मम्मा भी बहुत खुश हो रही है कि आप बच्चे आगे बढ़कर स्थापना के कार्य में सहयोगी भी बने हो और राज्य अधिकारी भी बनेंगे। मम्मा ऐसे हाथ करके दृष्टि दे रही थी, सभी बड़े खुश हो रहे थे। जिन्होंने साकार में मम्मा को देखा भी नहीं वो भी बड़े खुश हो रहे थे। सभी वाह मम्मा वाह! कह रहे थे। मम्मा भी वाह बच्चे वाह! कह रही थी। बाबा ने फिर कहा मेरे एडवान्स पार्टी वाले इन्तजार कर रहे हैं, आपका। इन्हों का इन्तजार आप ही पूर्ण करने वाले हो। मुक्ति का दरवाजा आपको ही खोलना है। आप अभी जल्दी-जल्दी तैयार होकर बाबा के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलने के निमित्त बनो तो इन्हों को भी अपना भविष्य मिलेगा और आपको भी अपना भविष्य मिलेगा। फिर बाबा ने एडवान्स पार्टी को खास सामने बुलाया, उन्हों को दृष्टि दी। मम्मा साथ में ही थी। बाबा ने सभी को कहा देखो, आपको कितने तरफ से भोग आया है। हरेक ने अपने सेन्टर पर भोग लगाया है, कितने आप भाग्यवान हो जो आपकी मम्मा के साथ आप एडवान्स पार्टी के लिए सभी ने भोग बनाया है। भोग की थालियाँ तो इतनी थी जो सारा हॉल भर गया था। कल और आज के दोनों दिनों के भोग बाबा ने इमर्ज किये। बाबा ने कहा मम्मा आप इतने सारे भोग स्वीकार करो भी और कराओ भी। मम्मा ने कहा इतना सारा कैसे करेंगे! बाबा ने एडवान्स पार्टी को कहा इन सभी थालियों को आप दृष्टि दो। मम्मा और एडवान्स पार्टी दोनों ने मिलकर चक्कर लगाकर भोग को दृष्टि दिया। मम्मा ने ओ.आर.सी और मधुबन दोनों का भोग थोड़ा-थोड़ा मुख में डाला। बाकी चक्कर लगा के दृष्टि दी और कहा कि सभी को कहना सबने बहुत स्नेह से बनाया है तो हमने भी उससे ज्यादा स्नेह से स्वीकार किया।

फिर दादी और दीदी जो सामने-सामने बैठी थी उन्हों को भी भोग खिलाया। फिर बाबा ने कहा अच्छा आज तो चाहे इण्डिया में चाहे फॉरेन में, चारों ओर आपका ही नाम बाला है, आज आपके नाम से ही भोग बनाया है। आपके साथी भी एडवान्स पार्टी वाले हैं। कोई दादी को ज्यादा याद करता है, कोई दीदी को याद करते हैं, कोई चन्द्रमणी दादी को याद करते हैं। तो उन्होंने भी सभी को याद दी। फिर हम बाबा से मिलके मम्मा से मिलके साकार वतन में आ गई। ओम शान्ति।